

NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत के युवाओं को पंख देना: विकसित भारत
के लिए एक दृष्टिकोण

www.nextias.com

भारत के युवाओं को पंख देना: विकसित भारत के लिए एक दृष्टिकोण

संदर्भ

- भारत के पास जनसांख्यिकीय लाभांश है, जिसकी 65% से अधिक जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। इस छिपी हुई क्षमता का दोहन करने तथा इसे ठोस समृद्धि में बदलने की आवश्यकता है।

भारत के युवाओं की भूमिका: श्रम शक्ति से विकसित भारत तक

- **पिछले दशक में आर्थिक परिवर्तन:** भारत ने वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में अपना स्थान को सुदृढ़ किया है, 2014 में विश्व की 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से बढ़कर आज चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है।
 - इस प्रगति के मूल में इसकी श्रम शक्ति निहित है, जो लचीलेपन और उत्पादकता के माध्यम से विकास को गति दे रही है।
- **रोज़गार सृजन और औपचारिकीकरण:** RBI-KLEMS (K: पूंजी, L: श्रम, E: ऊर्जा, M: सामग्री और S: सेवाएँ) के अनुसार, जहाँ 2004-2014 के बीच केवल लगभग 2.9 करोड़ रोज़गार सृजित हुए, वहीं आगामी दशक में 17 करोड़ से अधिक रोज़गार सृजित हुए।
 - इसके साथ ही औपचारिकीकरण में भी तीव्रता से वृद्धि हुई है, जैसा कि EPFO के आंकड़ों से पता चलता है, जो भारत के श्रम बाजार में एक संरचनात्मक बदलाव का संकेत है।
- **सामाजिक सुरक्षा क्रांति:** 2015 में, केवल 19% भारतीय कम से कम एक सामाजिक सुरक्षा योजना के अंतर्गत थे।
 - 2025 तक, यह आँकड़ा बढ़कर 64.3% हो जाएगा - जिसमें 94 करोड़ लाभार्थी शामिल होंगे।
 - इसके साथ ही, भारत वर्तमान में विश्व की दूसरी सबसे बड़ी सामाजिक सुरक्षा प्रणाली है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने वैश्विक स्तर पर सबसे तेज़ विस्तार में से एक माना है।
- **जनसांख्यिकीय लाभांश:** भारत एक जनसांख्यिकीय परिवर्तन बिंदु पर है, जहाँ 65% जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है।
 - पश्चिम की वृद्ध अर्थव्यवस्थाओं के विपरीत, भारत की युवा शक्ति एक अद्वितीय लाभ प्रदान करती है।

भारत के युवाओं के सामने प्रमुख चिंताएँ और चुनौतियाँ

- **शिक्षा और कौशल अंतराल:**
 - **गुणवत्ता बनाम मात्रा:** हालाँकि नामांकन दर में सुधार हुआ है, फिर भी कई संस्थान पुराने पाठ्यक्रम और खराब बुनियादी ढाँचे का सामना कर रहे हैं।
 - **कौशल अंतर :** बड़ी संख्या में स्नातकों में उद्योग-संबंधित कौशल का अभाव है, जिसके कारण अल्प-रोज़गार होता है।
 - **डिजिटल विभाजन:** तकनीक तक असमान पहुँच सीखने में बाधा डालती है, विशेषकर ग्रामीण और हाशिए के समुदायों में।
- **रोज़गार और आर्थिक भागीदारी:**
 - **बेरोज़गारी:** युवा बेरोज़गारी उच्च बनी हुई है, विशेषकर शिक्षित शहरी जनसंख्या में।
 - **अनौपचारिक क्षेत्र का प्रभुत्व:** कई युवा कर्मचारी बिना किसी लाभ के कम वेतन वाली, असुरक्षित रोज़गारों में समाहित हो जाते हैं।

- **रोजगार बाज़ार में समावेश:** अर्थव्यवस्था बढ़ती युवा जनसंख्या के अनुरूप पर्याप्त औपचारिक रोजगार सृजित करने के लिए संघर्ष करती है।
- **मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण:**
 - **तनाव और चिंता:** शैक्षणिक दबाव, रोजगार की असुरक्षा और सामाजिक अपेक्षाएँ बढ़ती मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में योगदान करती हैं।
 - **सीमित सहायता प्रणालियाँ:** मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ दुर्लभ और कलंकित हैं, विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में।
- **नागरिक सहभागिता एवं नेतृत्व:**
 - **राजनीतिक उदासीनता:** एक बड़ा मतदाता समूह होने के बावजूद, शासन और नीति-निर्माण में युवाओं की भागीदारी सीमित है।
 - **मंचों का अभाव:** युवाओं के लिए अपने विचार व्यक्त करने या निर्णयों को प्रभावित करने के लिए बहुत कम संरचित माध्यम विद्यमान हैं।
- **स्वास्थ्य एवं पोषण:**
 - **जीवनशैली संबंधी रोग :** निष्क्रिय आदतें और खराब आहार गैर-संचारी रोगों की शुरुआत का कारण बन रहे हैं।
 - **मादक द्रव्यों का सेवन:** युवाओं में बढ़ती व्यसन दर, विशेष रूप से शहरी केंद्रों में, एक बढ़ती हुई चिंता का विषय है।
- **सामाजिक असमानता और हाशिए पर होना:**
 - **लैंगिक असमानताएँ:** युवा महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और सुरक्षा में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।
 - **जातिगत एवं क्षेत्रीय असमानताएँ:** हाशिए पर रहने वाले समुदायों के युवाओं के पास अक्सर अवसरों और संसाधनों तक पहुँच की कमी होती है।

संबंधित सरकारी प्रयास और पहल

- **प्रधानमंत्री विकासशील भारत रोजगार योजना (PMVBRY):** इसे केंद्रीय बजट 2024-25 में शुरू किया गया था। इसका लक्ष्य दो वर्षों में 3.5 करोड़ रोजगार सृजित करना है, जिसका अभूतपूर्व ₹1 लाख करोड़ का परिव्यय है।
 - PMVBRY मेक इन इंडिया, राष्ट्रीय विनिर्माण मिशन और उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहनों से प्राप्त सीखों को एकीकृत करता है, साथ ही स्वचालन और आपूर्ति-श्रृंखला में बदलावों से प्रभावित वैश्विक रोजगार परिदृश्य के अनुकूल भी है।
 - यह राष्ट्र निर्माण में श्रमिकों और नियोक्ताओं की साझा जिम्मेदारी को दर्शाता है।
 - यह प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण और सामाजिक सुरक्षा नामांकन से लाभों को जोड़कर पारदर्शिता सुनिश्चित करता है और औपचारिकता को गति देता है।
 - विनिर्माण क्षेत्र पर विशेष बल आत्मनिर्भर भारत और वैश्विक विनिर्माण नेतृत्व की राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप है।
- **दोहरा ध्यान:**
 - **श्रमिक और नियोक्ता:** यह व्यवसायों के लिए भर्ती जोखिमों को कम करते हुए श्रमिकों के लिए प्रवेश बाधाओं को कम करता है, रोजगार के साथ-साथ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है।
 - **भाग अ:** प्रथम बार नियुक्त कर्मचारियों को प्रत्यक्ष प्रोत्साहन (दो किशतों में ₹15,000 तक)।
 - **भाग ब:** नियोक्ताओं के लिए सहायता (प्रति माह प्रत्येक नए कर्मचारी के लिए ₹3,000 तक)।

अन्य पहल और प्रयास

- **प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना:** यह युवाओं को रोजगार और आजीविका के अवसरों को बढ़ाने के लिए उद्योग-संबंधित प्रशिक्षण प्रदान करती है।
 - इसमें आईटी, विनिर्माण और स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों में प्रमाणन एवं प्लेसमेंट सहायता शामिल है।
- **राष्ट्रीय युवा वाहिनी :** यह राष्ट्र निर्माण गतिविधियों में संलग्न होने के लिए अनुशासित और प्रेरित युवा स्वयंसेवकों का एक दल तैयार करती है।
 - स्वयंसेवक सामुदायिक विकास, जागरूकता अभियानों और आपदा प्रतिक्रिया प्रयासों में सहायता करते हैं।
- **किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम:** इसका उद्देश्य युवाओं को आयु-उपयुक्त, सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक ज्ञान से सुसज्जित करना है।
 - यह जीवन कौशल, स्वास्थ्य जागरूकता और ज़िम्मेदार निर्णय लेने पर केंद्रित है।
 - यह समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए स्कूलों और युवा संगठनों के माध्यम से प्रदान किया जाता है।
- **राष्ट्रीय खेल महासंघों को सहायता:** यह युवा एथलीटों को वित्त पोषण, बुनियादी ढाँचे और प्रशिक्षण के माध्यम से सहायता प्रदान करता है।
 - यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।
 - यह युवा भारतीयों के बीच खेलों को एक करियर और जीवनशैली के रूप में बढ़ावा देता है।
- **पढ़ना लिखना अभियान:** एनसीसी, एनएसएस और एनवाईकेएस के युवा स्वयंसेवकों को शामिल करते हुए एक साक्षरता अभियान।
 - वंचित समुदायों में वयस्क साक्षरता और बुनियादी शिक्षा को लक्षित करता है।
 - शिक्षा के माध्यम से युवाओं के नेतृत्व में सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना।

आगे की राह: विकसित भारत 2047 की ओर

- रोजगार केवल एक आर्थिक संकेतक नहीं है - यह राष्ट्र निर्माण का सार है।
- प्रधानमंत्री विकासशील भारत रोजगार योजना कार्य में गरिमा और अवसर की समानता के प्रति एक राष्ट्रीय प्रतिबद्धता है।
 - यह प्रत्येक युवा को सार्थक रोजगार तक पहुँच प्रदान करके 2047 तक विकासशील भारत की नींव रखती है।

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: 2047 तक विकसित भारत के विजन को प्राप्त करने में भारत के युवाओं की भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। भारत के भविष्य को आकार देने में सरकारी पहलों, युवा सशक्तिकरण रणनीतियों और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।